दशम माला, खंड 9, अंक 20

मंगलवार, 24 मार्च, 1992
4 चैत्र, 1914 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

तीसरा सत्र

(दसवीं लोक सभा)

(खंड 9 में अंक 11 से 20 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।]

विषय-सूची

दशम माला, खंड 9, तीसरा सत्र, 1992/1914 (शक)

अंक 20, मंगलवार, 24 मार्च, 1992/4 चैत्र, 1914 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन सम्बन्धी उल्लेख	
(डा० गुरुदयाल सिंह ढिल्लों का निधन)	
श्री पी० वी० नरसिंह राव	2—3
श्री लाल कृष्ण आडवाणी	3
श्री राम विलास पासवान	3--4
श्री सोमनाथ चटर्जी	4
श्री पी० जी० नारायन	5
श्री नानी भट्टाचार्य	5
श्री चित्त बसु	5
श्री इब्राहीम सुलेमान सेट	5--6
श्री बलराम जाखड़	6—7
श्री रवि राम	7
श्री भोगेन्द्र झा	8

लोक-सभा

मंगलवार, 24 मार्च, 1991/4 चैत्र, 1914 (शक)

लोक सभा 11 बजे म० पू० पर समवेत हुई।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

[डा० गुरुदयाल सिंह ढिल्लों का निधन]

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मुझे इस सदन को लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० गुरुदयाल सिंह ढिल्लों के दुःखद निधन की सूचना देनी है। वे 8 अगस्त, 1969 से 19 मार्च, 1971 तक तथा पुनः 22 मार्च, 1971 से 1 दिसम्बर, 1975 तक इस पद पर बने रहे।

डा० ढिल्लों का निधन 23 मार्च, 1992 को दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में दिल का दौरा पड़ने से हुआ। कुछ दिन पहले उनके दिल की 'बाई-पास शल्य-चिकित्सा की गई थी।

डा० ढिल्लों बहुत ही विनम्र स्वभाव के मृदुभाषी व्यक्ति थे। इन्हीं गुणों के कारण ही तत्काल ही उन्होंने अपने आपको लोकप्रिय बना लिया और देश तथा विदेश में उनके अनेक मित्र बन गए।

सन् 1967 में लोक सभा के सदस्य बनने से पहले वह 1952 से 1967 तक पंजाब विधान सभा के सदस्य थे। राज्य विधान सभा में इस अवधि के दौरान, 1952-54 के दौरान वह उपाध्यक्ष के पद पर निर्वाचित हुए। 1954 में वे विधान सभा के अध्यक्ष चुने गए तथा 1962 तक इसी पद पर बने रहे। 1964-66 के दौरान वह पंजाब मन्त्रिमण्डल में केबिनेट मन्त्री रहे।

डा० ढिल्लों 1967 में चौथी लोक सभा के लिए पंजाब राज्य के तरनतारन निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए तथा 1971-77 के दौरान पांचवीं लोक सभा में पुनः इसी निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए। 1984-89 के दौरान आठवीं लोक सभा के लिए फिरोजपुर निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए। केन्द्रीय केबिनेट मन्त्री के रूप में उन्होंने सातवें दशक में परिवहन और नौवहन तथा आठवें दशक में कृषि मंत्रालयों का कार्यभार बखूबी संभाला। 1980-82 दौरान वह कनाडा में भारत के उच्चायुक्त के पद पर रहे। 1980 में वह योजना आयोग के सदस्य रहे।

डा० ढिल्लों का संसदीय जीवन तीन दशकों से अधिक रहा। वह दो बार लोक सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और सभा के कार्यसंचालन में अपनी दक्षता और योग्यता का परिचय दिया। डा० ढिल्लों द्वारा दिए गए निर्णय तथा टिप्पणियां बाद के अध्यक्षों के लिए पूर्वोदाहरण बन गए हैं। संसदीय प्रक्रिया पर उनके गहन ज्ञान की छाप सभा की कार्यवाही में देखी जा सकती है। संसदीय क्षेत्र में उनकी ख्याति

उनके मृदुभाषी स्वभाव तथा आकर्षक व्यक्तित्व के कारण वह अन्तर संसदीय संघ की अन्तर संसदीय परिषद के (अध्यक्ष) प्रेजीडेंट निर्वाचित किए गए तथा कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी एसोसिएशन की कार्यकारी समिति के 'चेयरमैन' भी रहे। वर्ष 1971-74 के दौरान कामनवेल्थ अध्यक्षों की स्थायी समिति के भी चेयरमैन रहे।

अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन के चेयरमैन के रूप में उन्होंने लगभग एक दशक तक भारत की इस शीर्ष संसदीय निकाय के वाद-विवाद को दिशानिदेश दिया। भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में उन्होंने भारत तथा भारतीय संसद तथा भारतीय लोगों के लिए सम्मान तथा गौरव अर्जित किया। अनेक प्रमुख देशों की संसदों न विभिन्न अवसरों पर उन्हें सम्मान प्रदान किया वर्ष 1985 तथा 1986 में जेनेवा में मानवाधिकार पर संयुक्त राष्ट्र आयोग के 41वें तथा 42वें अधिवेशनों में उन्होंने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

वह एक पुराने स्वतंत्रता सेनानी थे और राष्ट्र के प्रति अर्पित की गई सेवाओं के लिए उन्हें ताम्रपत्र से विभूषित किया गया।

डा० ढिल्लों एक विद्वान, अधिवक्ता और एक पत्रकार होने के साथ-साथ अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध थे। उच्च शिक्षा, ग्रामीण खेल-कूद तथा समाज-सेना को बढ़ावा देने में उन्होंने विशेष रूचि ली।

उनकी कमी हमें सदा महसूस होती रहेगी।

प्रधानमन्त्री (श्री पी० वी० नरसिंह राव) : अध्यक्ष महोदय, मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है कि ढिल्लों साहिब अब हमारे बीच नहीं रहे। तीन या चार दिन पहले मुझे उनसे मिलने का अवसर मिला था : वह स्वस्थ्य थे। किसी ने भी इतनी जल्द उनकी दुःखद मृत्यु की कल्पना नहीं की होगी।

एक वरिष्ठ राजनैतिक कार्यकर्ता तथा वरिष्ठ राजनीतिज्ञ की हैसियत से वे अनेक पदों पर आसीन रहे। उन्होंने अनेक पदों को सुशोभित किया। उनका व्यक्तित्व, बहुत ही सौम्य, मृदु-भाषी था। आवश्यकतानुसार वह दृढ़-निश्चयी थे तथा उनका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था।

मन्त्री के रूप में मुझे उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था। जब वे अध्यक्ष थे तब मैं लोकसभा का सदस्य नहीं था। लेकिन हमने अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यों का पालन किया। विधान सभाओं में पूर्वोदाहरण के रूप में समय-समय पर उनके द्वारा दिए गए निर्णय हमारा मार्गदर्शन करते रहे। उनके सानिध्य में आते ही गम और उदासी का नाम निशान मिट जाता था। अपने उसी मृदु-भाषी रूप में भी वह बहुत हंसमुख थे और ऐसा लगता था कि उन्होंने किसी दुःख, गम को अपने पास आने न दिया हो। उन्होंने बड़े मुश्किल से कनाडा में उच्चायुक्त का पद स्वीकार किया वह देश छोड़ना नहीं चाहते थे वह संसद सदस्य नहीं थे। लेकिन वे कहते थे "मेरा स्थान देश में ही है" विदेश मन्त्री के रूप में मैं उन्हें मनाने के लिए उनके पास गया और निवेदन किया उनकी आवश्यकता कनाडा में है हमारा मानना था कि उनकी सेवाएं अमूल्य होंगी और हम इस पद के लिए निश्चय ही भारतीय विदेश सेवा के लोगों के अतिरिक्त, जोकि उपलब्ध थे, किसी अन्य व्यक्ति को नियुक्त करने के बारे में नहीं सोच सकते थे। महोदय उस कार्य के सम्बन्ध में मुझे कुछ व्यक्तिगत जानकारी है। मैं उनकी नियुक्ति से भारत कनाडा सम्बन्धों में सुधार आया। निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि जिस तरीके से उन्होंने उस समस्या को सुलझाया था, वह अपने आपमें एक उदाहरण है और उनके बाद के उच्चायुक्तों ने उसी पर ही आगे कार्य किया मूल कार्य उन्होंने ही किया था। कनाडा में भारतीय उच्चायुक्त के रूप अपनी मातृभूमि भारत को की गई उनकी सेवाओं

को हम भुला नहीं सकते हैं। यह तथ्य सभी नहीं जानते हैं। चूंकि मुझे इसकी बहुत नजदीक से इसकी जानकारी है, मैं चाहूंगा कि यह कार्यवाही-वृतान्त में शामिल हो वे पूरी तरह से राष्ट्र को समर्पित थे। वह राष्ट्रीयता की खातिर कुछ भी कर सकते थे। पंजाब में उन्होंने अनेक समस्याओं का सामना किया। वे पंजाब से सम्बन्धित प्रत्येक बैठक में भाग लेते थे और पंजाब में ऐसे प्रत्येक कार्य में सम्मिलत होते थे, वे स्वयं आते थे और अपने सुझाव देते थे जोकि हमारे लिए अमूल्य होते थे। आज हम उनकी बहुत कमी महसूस कर रहे है। व्यक्तिगत रूप से, मैं समझता हूं, उनका हमें छोड़ जाना, हमारी लिए एक बहुत बड़ी क्षति है। किसी भी पद पर आसीन न होते हुए भी उनकी सेवाएं हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। हमें उनके निधन पर गहरा शोक है। हम संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं।

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधी नगर) :अध्यक्ष महोदय, आपने जो विचार प्रकट किए हैं, गुरुदयाल सिंह ढिल्लों के बारे में और प्रधानमन्त्री जी ने भी जो विचार प्रकट किए हैं, मैं अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं। कल शाम को जब यह दुःखद समाचार मिला तो सहज विश्वास नहीं होता था, क्योंकि कुछ ही दिनों पहले तक वे स्वस्थ थे। जब वे अपनी बाई-पास सर्जरी के लिए इन्स्टीच्यूट में भरती हुए थे, तो बाई-पास-सर्जरी के बाद भी सूचना मिली थी कि बाई-पास सर्जरी ठीक प्रकार से हो गई और वे स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। लेकिन अचानक स्थिति में बिगाड़ आया और कल जो प्रातः काल मैसिव हार्ट-अटैक हुआ, वह जान-लेवा बन गया।

अध्यक्ष जी, मैं वर्षों तक राज्य सभा में रहा हूं, लेकिन आज से बीस साल पहले उनके नेतृत्व में, जब वे लोकसभा के अध्यक्ष थे, एक शिष्ट मण्डल चैकोस्लोवाकिया गया था, उसमें उनके सहयोगी के रूप में मैं भी गया था और तब उनको निकट से देखा। उनकी शालीनता, उनकी सहृदयता, जैसा आपने कहा कि जैंटीलिटी, वह ऐसी है कि जो सहज किसी भी सहयोगी पर छाप छोड़ जाती है। बाद में तो एक वरिष्ठ सांसद के सहयोगी के नाते वे मन्त्री भी रहे, बहुत कुछ रहे और कभी-कभी मन में एक इच्छा होती है कि अगर हमारे पास दो पूर्वाध्यक्ष यहां पर मौजूद हैं, वे भी अगर हमारे बीच में यहां पर रहते तो बहुत अच्छा रहता। वे अपने कर्तव्यों के प्रति इतने जागरुक रहते थे, चाहे वे दिल्ली में रहते हैं वर्षों से और मैं पंडारा-पार्क में रहता हूं, मेरे पड़ौस में ही उनको मकान एलाट हुआ, तो भी पंजाब में भी अभी-अभी चुनाव हुए उसमें मतदान करने के लिए वे वहां पर गए, पंजाब के चुनावों में। ये सारी बातें और सारे गुण ऐसे हैं, जिनके कारण उनकी मृत्यु हम सब के लिए जिन्होंने भी उनके साथ कार्य किया, बहुत ही शोक का कारण है।

मैं उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री राम विलास पासवान (रोसेड़ा) : अध्यक्ष जी, आपने, माननीय प्रधानमन्त्री जी ने और नेता विरोधी दल ने जो ढिल्लों साहब के प्रति संवेदना प्रकट की हैं, मैं अपने को भी उसमें शरीक करता हूं और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

हम लोगों की ढिल्लों साहब के साथ काम करने का मौका तो नहीं मिला, लेकिन जो हम लोग उनके विषय में सुनते रहे और मैं समझता हूं कि भारत का कोई ऐसा पद नहीं था, महान-से-महान पद, जिस पर उन्होंने अपने को सुशोभित नहीं किया। जैसा आपने कहा, लोक सभा के स्पीकर से लेकर राज्य विधान सभा के स्पीकर के पद तक, मन्त्री से लेकर हाई-कमिश्नर व प्लानिंग कमीशन के सदस्य तक ये सारे

[श्री राम विलास पासवान]

के सारे गुण एक व्यक्ति में मौजूद थे। वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। विधि का विधान है, यहां पर तो किसी को रहना नहीं, एक-न-एक दिन तो सब को जाना है, लेकिन कुछ एक व्यक्तित्व ऐसा होता है जो अपनी छाप छोड़ कर जाता है और उसमें ढिल्लों साहब एक थे।

अध्यक्ष महोदय, मैं पुनः एक बार इस संवेदना में अपने को शरीक करता हूं और उनके संतप्त परिवार के प्रति अपनी अपनी येदना प्रकट करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं डा० ढिल्लों की मृत्यु पर शोक व्यक्त करता हूं तथा जो कुछ भी यहां कहा गया वह मेरा तथा मेरे दल के भी ऐसे ही विचार हैं।

जब डा० ढिल्लों अध्यक्ष थे तब मैं भी सभा का सदस्य था तथा मैं यह कह सकता हूं कि उन्होंने अध्यक्ष के रूप में अपने कृत्यों का निर्वहन बड़ी कुशलता से किया और वह संसदीय लोकतन्त्र के सच्चे सिद्धांतों के प्रति वचनबद्ध रहे। यहां तक कि, मुझे याद है कि आपातकाल के दौरान वे हमेशा विपक्षी दल को पूरा अवसर देने की कोशिश करते थे।

पांचवीं लोक सभा के दौरान अध्यक्ष थे, तो कुछ लोग कह सकते हैं कि वे एक शांत व्यक्ति नहीं थे लेकिन विपक्षी दल में रहते हुए भी हमने यह कभी महसूस नहीं किया कि हमारा अध्यक्ष हमारे प्रति सहानुभूतिपूर्ण नहीं है। उन्होंने हमें पूरा अवसर दिया और पांचवीं लोक सभा में एक नए सदस्य के रूप में हम सबने उनके स्नेह और विदेशों का लाभ प्राप्त हुआ।

पांचवी लोक सभा में, ज्योतिर्मय बसु, मधु लिमये के साथ अपने पूरे जोश में थे, लेकिन मुझे स्पष्ट रूप से ज्योतिर्मय बसु के लिए उनका स्नेह याद है। किसी ने ऐसा भी सोचा होगा कि वह एक उत्तेजित वक्ता है और वे हमेशा अध्यक्ष को परेशान करते रहते। जहां अब डा० पाण्डेया बैठे हैं वे वहां बैठा करते थे। केवल एक बात जो वे कहा करते थे वह थी; ज्योतिबसु आपको थोड़ा पीछे बैठना चाहिए और मेरे बिल्कुल समीप नहीं बैठिए। उनके लिए डा० ढिल्लों के स्नेह की बराबरी नहीं की जा सकती।

उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की। वह न केवल एक सच्चे सज्जन व्यक्ति थे अपितु उनकी राष्ट्रीय, सामाजिक, तथा सांस्कृतिक जीवन के अनेक पहलुओं में गहरी रूचि भी थी। मुझे याद है, एक बार जब वे कलकत्ता गए थे और अध्यक्ष होने के नाते राजभवन में ठहरे हुए थे, तो मुझे उनसे मिलने का अवसर मिला था। उन्होंने हमें मिलने के लिए आमंत्रित किया था और उन्होंने राजनीति के अतिरिक्त हमारे सांस्कृतिक जीवन के सम्बन्ध में, हमारे सामाजिक जीवन के बारे में, हमारी शैक्षिक समस्याओं के बारे में बातचीत करने में हमें अपना काफी समय दिया था। वह एक संपूर्ण व्यक्ति, जिन्होंने इस देश के संसदीय लोकतन्त्र की नींव को सुदृढ़ करने तथा देश के सामान्य आदमी के जीवन को बेहतर बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित किया। हमें इस महान भारतीय के निधन पर गहरा शोक है।

हम आपके माध्यम से शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं। मुझे उम्मीद है कि हम सब उनके द्वारा दिए गए योगदान को याद रखेंगे और अपने दिन-प्रति-दिन के कार्यों के निष्पादन में उनका अनुकरण करने की कोशिश करेंगे।

[अनुवाद]

श्री पी० जी० नारायणन (गोबिचेट्टिपालयम) : अध्यक्ष महोदय, श्री ढिल्लों ने एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में, राज्य मन्त्री के रूप में, कैबिनेट मन्त्री के रूप में और इस सभा के अध्यक्ष के रूप में कई पदों पर रहकर देश की सेवा की । इन्होंने कनाडा में भारतीय उच्चायुक्त के पद पर भी कार्य किया । उनके निधन से, हमने एक महान राजनीतिज्ञ और एक विशिष्ट सांसद को खो दिया है । उन्होंने इस देश के लिए बहुत कुछ समर्पित किया । उनके निधन से देश को भारी क्षति हुई है ।

मैं, अपने दल, अखिल भारतीय अन्ना डी० एम० के० की ओर से शोक-सन्तप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं ।

श्री मानी भट्टाचार्य (बरहामपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस सभा के सभी साथियों की भावनाओं का समर्थन करता हूं और आपकी भावनाओं का भी समर्थन करता हूं । मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे परिचित नहीं था । मुझे उनके साथ कार्य करने अथवा सीधे परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ पर मैंने उनके द्वारा रचे गये साहित्य का अध्ययन किया है । मैंने उनके बारे में समाचार भी पढ़े हैं । परन्तु उन्होंने भारत, संसदीय राज्यतंत्र और अध्ययन के अन्य क्षेत्रों में जो योगदान किया, उसके विषय में आपने पहले से ही विस्तार से बता दिया । मैं इन बातों को पुनः दोहराना नहीं चाहता ।

हम डा० ढिल्लों की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं और इसके साथ-साथ हम शोक सन्तप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं ।

श्री चित्त बसु (बारसाट) : अध्यक्ष महोदय, मैं भी प्रधानमन्त्री विपक्ष के नेता और अन्य विशिष्ट सहयोगियों के साथ डॉ० ढिल्लों के निधन पर दुःख और शोक व्यक्त करता हूं । डा० ढिल्लों, एक देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी और धर्मनिरपेक्ष व लोकतांत्रिक मूल्यों के समर्थक थे । एक सांसदविद् के रूप में उनमें दुर्लभ गुण थे । उन्होंने अनेक पदों पर कार्य किया ।

पांचवीं लोक सभा में, जब वे, इस सभा के अध्यक्ष थे, तब मैं इस सभा का सदस्य नहीं था । मैं उस समय राज्य सभा का सदस्य था । परन्तु मुझे बताया गया था कि उन्होंने उस अशांत समय में भी, सभा के सदस्यों के अधिकारों और विशेष अधिकारों को बनाये रखा था, जिसकी पुष्टि श्री सोमनाथ चटर्जी ने भी की थी । मुझे ये भी बताया गया था कि उनमें महान परम्पराएं, मूल्य और प्रथाएं थी और जिन्हें उनके जीवनकाल में इस सभा में में स्थापित किया गया । मैं इस अवसर पर दिवंगत आत्मा की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और इसके साथ-साथ मेरी ओर से मेरे दल की ओर से, शोक सन्तप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं ।

श्री इब्राहीम सुलेमान सेट (पोन्नानी) : अध्यक्ष महोदय, ये बड़े दुःख की बात है कि श्री ढिल्लों जी गुजर गए । हम सभी लोग उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हैं । ये सचमुच पूर्ति न होने वाली राष्ट्रीय क्षति है उन्होंने पंजाब राज्य विधान सभा के अध्यक्ष व राज्य केबिनेट के मन्त्री के रूप में, केन्द्रीय मन्त्री के रूप में, कनाडा उच्चायुक्त के रूप में और इस सम्मानीय सदन में दो बार अध्यक्ष के रूप में और विभिन्न पदों पर रहकर देश की सेवा की । जब ढिल्लों जी अध्यक्ष थे, मुझे इस सभा के सदस्य के रूप में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । मैं जानता हूं कि उनके मन में हमारे लिये कितना प्रेम था । यह मेरे लिए वैयक्तिक हानि है । मुझे ऐसा लगता है कि मैंने एक स्नेहशील बड़े भाई को खो दिया है । मेरे प्रति उन्हें बहुत प्रेम था । मैं कहूंगा कि उन्होंने, इस सभा के सभी वर्गों का सहयोग लेते हुए, इस

[श्री इब्राहीम सुलेमान सेट]

सभा का कार्य, बखूबी निभाया। वे गुण सम्पन्न व्यक्ति थे। वे उच्च कोटि के हास्य स्वभाव के व्यक्ति थे। वे सज्जन व्यक्ति थे। उन्हें निकट से जानने का अवसर मुझे उस समय मिला जब मैं ढिल्लों जी के नेतृत्व में स्वीट्जरलैंड जाने वाली संसदीय शिष्टमंडल में था। हम। हम सभी उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हैं। मैं इसे हम सब के लिए, इस माननीय सदन के लिए और सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए भारी क्षति मानता हूं।

इन शब्दों के साथ मैं इस महान हस्ती को अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूं और आपकी ओर से शोक सन्तप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं उर्दू की उन पंक्तियों को दोहराना चाहता हूं जो मुझे याद है :—

बागवाने गुलशने हस्ती ये क्या किया,
जाने चमन था गुल जो, वही तू ने चुन लिया।

यह अति दुःख की बात है।

[हिन्दी]

कृषि मंत्री (श्री बलराम जाखड़) : अध्यक्ष जी, ढिल्लों साहब नहीं रहे। आपने, माननीय प्रधानमन्त्री जी ने और दूसरे विपक्ष के सभी दिग्गज नेताओं ने उनके प्रति जो कुछ कहा है वह सही था। मैं अपने हिसाब से कुछ कहना चाहता हूं। मेरा उनके साथ पंजाबी होने के नाते ही नहीं, किसान होने के नाते ही नहीं, भाईचारे के नाते भी बहुत गहरा सम्बन्ध था। शुरू से हम उनके साथ रहे, उनको बहुत नजदीक से देखा, उनके साथ बहुत कुछ सहा, बहुत कुछ हमने मिल कर किया। मैं एक मानव की हैसियत से जानता हूं कि उनके दिल में जो मानवता थी, मैं यह कह सकता हूं कि मानवता के वे प्रतीक थे। आज महेन्द्र सिंह 'सहर' का मुझे एक शेयर याद आता है :—

यूं तो हजारों बरस है आदमी का वजूद।
मगर आंख आज भी तरसती है आदमी के लिए॥

वे इन आदमियों में से थे। आदमी तो बहुत बढ़ गये हैं दुनिया में, लेकिन मानवता कितनी बाकी रह गई है इसको जरा हम देखने की कोशिश कर सकते हैं। मैंने उनको बतौर उपाध्यक्ष विधान सभा, अध्यक्ष और मन्त्री तथा फिर यहां के अध्यक्ष के नाते नजदीक से देखा है। हमारे भाईचारे के नाते मैं उनसे बहुत सहारा लेता रहा हूं। जब वे इस सीट पर बैठते थे; उनकी जितनी रूलिंग्स थी उसके सहारे हम अपनी गाड़ी चलाते रहे। इसके पश्चात मैं यह देख सकता हूं कि उनके दिल में कितनी सहृदयता थी, कितना सरल स्वभाव था, कितने हंसमुख थे वे। चुपचाप से कुछ कह देते थे तो हंसी का फव्वारा छूट जाता था।

मैंने उनके साथ 25 दिन जेल में भी बिताये, जब इन्दिरा जी के विषय में हम गये थे। लेकिन हमें कभी पता नहीं चला कि हम जेल में बैठे हैं या पिकनिक मना रहे हैं। हमेशा यही सोचा करते थे कि ऐसा सहृदय आदमी जब साथ है तो कुछ महसूस ही नहीं होता था कि समय कैसे कटता है। इसके साथ-साथ उनके दिल में राष्ट्रीयता की ओत-प्रोत भावना थी। मैं कहूं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हमारे प्रदेश में वे राष्ट्रीयता के आखिरी दिग्जों में से थे। उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में हिस्सा लिया और बगैर किसी हिल-हुल के अपने स्टैण्ड पर जमे रहे, अडिग रहे, उनके पैरों पर कभी लर्विश नहीं आयी,

कभी थरथराहट नहीं आयी कि मैं अपने पैरों से हटूं। मैं समझता हूं कि वे इस तरीके से जाने वाले नहीं थे। लेकिन उनके हृदय पर चोट लगी और वह चोट थी अपने प्रदेश के घाव की, आज जो मानवता के ऊपर आघात बनता जा रहा है। मेरी उनसे बातें होती थीं, मैं उनके घर अक्सर जाया करता था, वे कहा करते थे—क्या बन गया है, कैसा जमाना था, किस बात के लिए आजादी ली थी, किस प्रकार का वातावरण बन गया है, भाई-भाई से लड़ रहा है। मुझे वे एक शेर सुनाया करते थे, वे कहते थे बलराम जी, देखो :—

क्या खूब रंग बदला है जमाने का, अपने अपनों पर वार करते हैं।
पहले मरते थे यार यारों पर, आज यारों से यार मरते हैं॥

इस किस्म की वे हृदयविदारक बात कहते थे तो उनके दिल में टीस उठती थी, एक हीक उठती थी, चीख और पुकार थी। वे सोचते थे इस प्रकार का वातावरण क्यों बन गया है। इस प्रकार के वातावरण का निराकरण करने के लिए वे प्रयत्नशील रहते थे। यही एक टीस थी जिसने उनको हृदय का रोग दिया वर्ना वे इतने हंसमुख आदमी थे कि रोग उनके पास फटक नहीं सकता था। वे हंसी से रोगियों के रोग दूर कर दिया करते थे। मैं यही समझता हूं कि आज वे अपने दिल में यही पीड़ा ले कर गए हैं कि मानवता फिर जाग उठे, मनों में सहिष्णुता पैदा हो, भाईचारा पैदा हो, इन्सान इन्सान के साथ मिल कर रहे और उनके बताये हुए मार्ग पर आगे चल कर हम आपस में फिर उसी प्रकार से भारत मां की रक्षा के लिए तत्पर हो कर एक साथ; एकजुट होकर जियें। ऐसी उनके दिल में भावना थी। उनकी मैं हमेशा से कद्र करता रहा हूं और आज भी मेरे ख्याल में, हाउस साथ बैठा है, सारे लोग, जितने यहां बैठे हैं वे समझते होंगे कि एक इन्सान चला गया है, जिसके दिल में दर्द था।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी श्रद्धा के फूल उनको पेश करता हूं और अपनी संवेदना उनके परिवार के प्रति व्यक्त करता हूं।

श्री रवि राय (केन्द्रपारा) : अध्यक्ष महोदय, आज सुबह हम यहां पहुंचे और मैं तीन दिन से बाहर था तो यह पता लगा कि हिल्लों जी हमारे बीच में नहीं रहे। असल में मैं चौथी लोक सभा में पहली बार संसद में चुनकर के आया तो उनके साथ सहृदय दोस्ती और बंधुता हो गई। मैं, पिछले 24-25 साल से दोस्ती के नाते उनको जानता हूं। भले ही वे शासक दल के संसद सदस्य थे लेकिन जानने के लिए पहला मौका मिला, 67 साल में। मेरे संसदीय जीवन में उनकी तरह एक दोस्त भले ही उनके साथ राजनीतिक मतभेद भी हो, बहुत कम मेरी जिन्दगी में मिले। मैं जब स्पीकर बना तो वे एकाएक घर में आ जाते थे तो हमें उनका अनुभव जानने का मौका मिला। एक बार बोले, जैसे सोमनाथ जी पांचवी लोक सभा में सदस्य नहीं थे, कि हमको दवाई लेनी पड़ती है तो आप कैसे मैनेज कर रहे हैं। मैंने कहा कि जिन्दगी में कोई दवाई नहीं ली और अभी भी दवाई की जरूरत नहीं पड़ रही है और जब तक स्पीकर रहूंगा तो दवाई लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। वे हाई कमीश्नर रहे, मन्त्री रहे और दो बार स्पीकर रहे, इनको एक चीज का हम लोगों को अनुकरण करना चाहिये वे नम्र थे और दोस्ती निभाने के लिए बिना बुलाये घर में आ जाते थे। इस तरह का अहंकारहीन आदमी मैंने जिन्दगी में नहीं देखा। जो काम संसदीय लोकतंत्र के जरिये हो सकता था, वह उन्होंने पूरा किया। आप जानते हैं कि राजनीतिक व्यक्ति की महत्वकांक्षा हर समय पूरी नहीं हो पाती है। लेकिन महत्वकांक्षा पूरी नहीं हुई—

[अनुवाद]

उनके साथ धोखा किया गया।

[हिन्दी]

लेकिन मैंने उनको कहा कि आप जिस-जिस ओहदे पर रहे और बाद में नहीं रहे तो जिस तरह आप राष्ट्र के लिए सोचते हैं और काम करते हैं तो हमें संतोष रहना चाहिए। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि मानवतावादी और राष्ट्रवादी नेता गुजर जाने के बाद हमारे आचारण जीवन में क्षीणता आ गई है। प्रधानमन्त्री जी ने और विरोधी दल के नेता ने जो उदगार संसद के सामने रखे हैं तो मैं अपने को उनके साथ जोड़ता हूं और उनकी पत्नी तथा परिवार से संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्री भोगेन्द्र झा (मधुबनी) : अध्यक्ष जी, श्री जी० एस० ढिल्लों शारीरिक रूप से हमारे बीच में नहीं रहे। कामों के रूप में भावना, चेतना के अंश के रूप में लोग रहते हैं और इसी मामले में हमारे प्राचीन ग्रंथों में आत्मा को अमर कहा गया है। कल जब हम सरदार भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की शहादत की तिथि मना रहे थे अखिल भारतीय स्वतंत्रता सैनिक संगठन की ओर से तीन मूर्ति में तो अचानक खबर मिली कि श्री ढिल्लों का देहान्त हो गया। हम सह-सैनिक थे स्वतंत्रता संग्राम के तो वहां पर संगठन ने श्रद्धांजलि अर्पित की। यहां पर वे लोक उपक्रम समिति के अध्यक्ष हुआ करते थे और मैं भी उस समिति का सदस्य था इसलिए ज्यादा नजदीकी और ज्यादा गहराई से जानने और साथ रहने का और उस समिति में काम करने का मौका मिला था। मुझे एक वाकया याद है। जब मैं उस समिति में अकेला रह गया था तो यह हुआ कि आई० बी० पी० एली को समाप्त कर दिया जाए। सारे तर्क और तथ्यों में मैं नहीं जाऊंगा। अन्त में यह हुआ कि देश की आत्म-निर्भरता का प्रश्न है और मैंने जब अपने विरोध का नोट दिया तो श्री ढिल्लों जी ने बहस की। ऐसा हुआ कि हम लोग एक मत से सहमत हो गये और सिर्फ बहुमत के आधार पर उस पर काम नहीं किया। अध्यक्ष के रूप में वे लोक सभा में रहे और मंत्री के रूप में रहे और स्वतंत्रता सैनिक के रूप में रहे। स्वतंत्रता सैनिकों की ऐसी जमात है जिसमें केवल खर्च होता जा रहा है।

आमदनी की गुंजाइश मालूम नहीं पड़ती है। इस बिरादरी में से एक महान व्यक्तित्व आज हमारे बीच शारीरिक रूप में नहीं है इसलिए अपने दल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से, उसके संसदीय ग्रुप की ओर से अपनी ओर से मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : हम अपने इस मित्र के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं और मुझे विश्वास है कि शोक सन्तप्त परिवार को अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करने में सभा मेरे साथ होगी।

दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए सभा कुछ क्षणों के लिए मौन धारण करेगी।

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे

अध्यक्ष महोदय : शव-यात्रा संसद के परिसर से होकर गुजरेगी। संसद की ओर से एक नम्बर गेट के पास दिवंगत आत्मा के शरीर पर, पुष्पमाला चढ़ाई जायेगी। कृपया सदस्य इसमें सम्मिलित हों।

11.36 म०पू०

तत्पश्चात् लोक सभा बुधवार, 25 मार्च, 1992/5 चैत्र, 1914 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

मुद्रक : सनलाईट प्रिंटिंग प्रैस, 2265, डा० सेन मार्ग, दिल्ली-6

पी.एल.एस. 48/9/20/92 (एस.)
250

1992 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमों (सातवां संस्करण)
के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और
प्रबंधक, सनलाईट प्रिंटर्स, 2265, डा० सेन मार्ग, दिल्ली-6 द्वारा मुद्रित।

लोक सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

मंगलवार, 24 मार्च, 1992 / 4 चैत्र, 1914 (शक)

का

शुद्धि- पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	शुद्धि
विषय सूची (1)	1	"श्री पी॰जी॰ नारायन" के स्थान पर "श्री पी॰जी॰ नारायणन" पढ़िये।
विषय सूची (1)	नीचे से पंक्ति 2	"श्री रवि राम" के स्थान पर "श्री रवि राय" पढ़िये।
3	18	"जल" के स्थान पर "जब" पढ़िये।
4	5	"येदना" के स्थान पर "वेदना" पढ़िये।
4	15	"विर्देशों" के स्थान पर "निर्देशों" पढ़िये।
5	8	"संविददा" के स्थान पर "संविदना" पढ़िये।
6	22	"दुदिया" के स्थान पर "दानया" पढ़िये।